Daily Gospel Reflections in Hindi

07 August 2019

योहन 12: 23-28

GRAIN OF WHEAT SHOULD FALL INTO THE EARTH AND DIE

विज्ञान की कक्षा में हम सब ने भोजन चक्र के बारे में पढ़ा है कि किस प्रकार एक जंतू दूसरे को अपना भोजन बना कर जीते हैं। आज के सुसमाचार में प्रभु कहते हैं कि गेहूँ का एक दाना स्वयं नष्ट हो कर बहुत से दानों को पैदा करता है। स्वयं प्रभु येसु ने भी यही किया, स्वयं रोटी बनकर हमें अनंत जीवन का रहस्य और मार्ग बताया। हम में से जो भी दूसरों के लिये जीवन का कारण बन ना चाहता है उसे भी मरना पडेगा।

मृत्यु सुनिश्चित है लेकिन अगर वह जीवनदायी नहीं होती तो ना केवल हमारी मृत्यु बल्कि हमारा जीवन भी व्यर्थ हो जाता है। हमारी मृत्यु का फल हमारा जीवन ही निधारित करता है। खेत में बीज बोने के बाद यदि वह अंकुरित नहीं होता तो बोने वाला निराश और हताश हो जाता है। उसी तरह यदि हम एक जीवनदायी जीवन नहीं जीते तो हमारे प्रभु को निराशा होती है और वह बारंबार हमें प्रेरित करता है कि हम फलदायी जीवन जियें। यह फल ना केवल स्वयं के लिए हो बल्कि दूसरों के लिए भी। जंगल में हम दो तरह के पेड़ देखतें हैं एक जो स्वयं अपना भोजन बनाते और दूसरे परजीवी जो दूसरे वृक्षों में लटक कर उस का रस चूस लेते और उस वृक्ष को भी नष्ट कर देते हैं। हम जांच कर देखे कि हम फलदायी हैं या परजीवी। प्रभु कहते हैं ...जो मुझ में विश्वास करता है वह अपनी प्यास बुझाये... उसके अंतःस्तल से संजीवन जल की नदिया बह निकलेगी योहन 7:38। हम भी जीवनदायी बने और फलदायी जीवन जियें।

Rev. Fr. Anil Francis

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019